

Sl. 212, v. 1, a. दत्तं प्रतिश्रुतं वा ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 213, v. 1. यदि तदत्तमसौ गृहीत्वा लोभादहंका-
राद्वा न त्यजति प्रतिश्रुतं वा धनं बलेन गृह्णाति ॥
(*Coulloúca.*)

Sl. 219, v. 1, a. ग्रामदेशशब्दाभ्यां तद्वासिनो लक्ष्यन्ते
संघो वणिगादिसमूहः ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 220 et 284, v. 2, a. षप्तिष्कान् *éd. Calc. éd. Lond.*
— षणिष्कान् *ms. dévan.* Cette dernière orthographe est
plus correcte.

Sl. 220, v. 2. = समस्तं व्यस्तं वा कार्यगौरवला-
घवापेक्षयेति ॥ (*Rāghavānanda.*)

Sl. 221, v. 1, a. एतद्दण्डविधिं *éd. Calc. éd. Lond.* —
एतं दण्डविधिं *ms. dévan. ms. beng.* Cette leçon est bien
préférable ; je regrette de ne pas l'avoir adoptée.

Sl. 224, v. 2, b. षप्सवतिं *éd. Calc. éd. Lond. mieux*
षणवतिं.

Sl. 230, v. 2, a. अन्यथा तु यदि रात्रावपि पालह-
स्तगता भवन्ति ॥ (*Coulloúca.*)